परमेश्वर का वचन एक महान रहस्य को प्रकट करता है: परमेश्वर की शक्ति सबसे अधिक तब प्रकट होती है जब हम कमज़ोर होते हैं। शास्त्र कहता है:

“क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवंत होता हूँ।”
(2 कुरिन्थियों 12:10, Hindi O.V.)

इसका अर्थ है कि जब हमारी मानव शक्ति, तर्क और उपाय समाप्त हो जाते हैं, तभी परमेश्वर की अलौकिक शक्ति प्रकट होती है। हम आत्मनिर्भर होना छोड़ देते हैं और पूरी तरह से उस पर निर्भर हो जाते हैं।

यीशु ने स्वयं नम्रता और पूर्ण निर्भरता के इस दिव्य सिद्धांत को सिखाया:

“जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वही बड़ा किया जाएगा।”

(मत्ती 23:12, Hindi O.V.)

यह परमेश्वर के राज्य का एक बुनियादी सिद्धांत है: परमेश्वर घमंडियों का विरोध करता है, परन्तु नम्रों को अनुग्रह देता है (याकूब 4:6)। जब हम अपनी आत्मनिर्भरता छोड़ते हैं, तब हम परमेश्वर की दिव्य पूर्णता को अनुभव करते हैं।

परमेश्वर की शक्ति दुर्बलता में सिद्ध होती है

प्रेरित पौलुस ने इस सत्य का व्यक्तिगत अनुभव किया। जब वह गहन पीड़ा में था, तो उसने प्रभु से छुटकारे के लिए प्रार्थना की। और तब परमेश्वर ने उत्तर दिया:

“मेरा अनुग्रह तेरे लिये काफ़ी है, क्योंकि मेरी शक्ति निर्बलता में सिद्ध होती है।”
(2 कुरिन्थियों 12:9, Hindi O.V.)

इसके बाद पौलुस ने घोषणा की:

“इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड

करूँगा, कि मसीह की शक्ति मुझ पर छाया करे।”

अर्थात, मसीही जीवन में दुर्बलता कोई कमज़ोरी नहीं, बल्कि वह अवस्था है जहाँ मसीह की शक्ति पूर्ण रूप से कार्य करती है। “सिद्ध” के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द teleitai पूर्णता और परिपक्वता का अर्थ देता है — परमेश्वर की शक्ति तब पूर्ण रूप से प्रकट होती है जब हम स्वयं पर भरोसा करना छोड़ देते हैं।

आत्मिक घमंड परमेश्वर की शक्ति को रोकता है

यीशु ने कहा:

“चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु जो बीमार
हैं उन्हें होती है।”
(मत्ती 9:12, Hindi O.V.)

यह बात उसने उन फरीसियों और सदूकियों को कही जो स्वयं को धार्मिक समझते थे और उद्धार की आवश्यकता नहीं समझते थे। उनका आत्मिक घमंड उन्हें मसीह की आवश्यकता का एहसास नहीं होने देता था। इसके विपरीत, जो लोग अपने टूटेपन को स्वीकार करते हैं, वे चंगे और क्षमा प्राप्त करते हैं।

यदि हम स्वयं से भरे हुए हैं, तो परमेश्वर हमें नहीं भर सकता। परमेश्वर की शक्ति केवल उन खाली पात्रों में बहती है जो अपनी आत्मिक दरिद्रता को पहचानते हैं।

“धन्य हैं वे जो मन में दरिद्र हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।”
(मत्ती 5:3, Hindi O.V.)

निर्भरता ही विश्वास की सही स्थिति है

यीशु ने अपने अनुयायियों की तुलना भेड़ों से की, न कि बकरियों से:

“मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ
और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं।”
(यूहन्ना 10:27, Hindi O.V.)

भेड़ें अपने चरवाहे पर पूरी तरह निर्भर होती हैं। वे अपनी मर्जी से नहीं भटकतीं। ठीक उसी प्रकार परमेश्वर चाहता है कि हम जीवन की दिशा, सुरक्षा, प्रावधान और मार्गदर्शन के लिए पूरी तरह

उसी पर निर्भर रहें।

पौलुस कहता है कि हम “परमेश्वर की सन्तान” हैं (रोमियों 8:16), और यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर का राज्य उन्हीं का है जो छोटे बच्चों की तरह भरोसा और नम्रता रखते हैं:

“जब तक तुम न फिरो और छोटे बच्चों की नाईं न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।”
(मत्ती 18:3, Hindi O.V.)

जिस प्रकार एक छोटा बच्चा हर बात के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर करता है, उसी प्रकार हमें भी परमेश्वर पर हर बात के लिए निर्भर रहना चाहिए।

आप जितना परमेश्वर को देंगे, उतना ही पाएँगे

याकूब 4:8 में लिखा है:

“परमेश्वर के निकट आओ, और वह तुम्हारे निकट आएगा।”

(याकूब 4:8, Hindi O.V.)

इसका तात्पर्य है कि परमेश्वर स्वयं को उसी मात्रा में प्रकट करता है जितनी भूख और समर्पण हम उसमें दिखाते हैं। यदि हम केवल रविवार को उसे खोजते हैं, तो हम केवल रविवार को ही उसे अनुभव करेंगे। लेकिन यदि हम प्रतिदिन उसकी खोज करते हैं, तो प्रतिदिन उसका अनुभव करेंगे।

यीशु ने कहा:

“जिस माप से तुम मापते हो, उसी माप से तुम्हें भी मापा
जाएगा।”
(लूका 6:38, Hindi O.V.)

यह उदारता और आत्मिक भूख दोनों के लिए एक सिद्धांत है। यदि आप परमेश्वर को अपने दिल का केवल 20% देते हैं, तो आप उसे उसी 20% में कार्य करते हुए देखेंगे। लेकिन यदि आप स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दें, जैसे यीशु ने किया (यूहन्ना 5:30), तो वह स्वयं को पूर्ण रूप से प्रकट करेगा।

गवाही: जब हमने पूरी तरह भरोसा किया

एक समय हम एक किराए के कमरे में रहते थे। हर महीने के अंत में बिजली का बिल भरना होता था। लेकिन एक बार हमारे पास कुछ भी नहीं था — एक पैसा भी नहीं। हमने निर्णय लिया: हम उधार नहीं लेंगे, केवल परमेश्वर पर भरोसा करेंगे।

जब बिल की तारीख आई, तो बिजली वाले नहीं आए — जबकि वे हर दूसरे किराएदार के पास गए। कई दिन बीते… वे फिर भी नहीं आए। हमने बिजली का उपयोग जारी रखा, प्रभु पर विश्वास करते हुए।

फिर हमारा गैस भी खत्म हो गया — एक और समस्या। लेकिन 25 तारीख को मैंने अपने मोबाइल वॉलेट को देखा तो उसमें TSh. 48,000 जमा थे — बिना किसी संदेश, भेजने वाले या सूचना के। यह चमत्कार था।

हमने पैसे निकाले, और जैसे ही घर लौटे, बिजली वाले आ गए। हमने तुरंत उन्हें भुगतान किया। बचे हुए पैसे से हमने गैस और ज़रूरत की चीज़ें खरीदीं।

उस दिन भजन संहिता 46:1 सजीव हो गई:

“परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज

मिलनेवाला सहायक है।”
(भजन संहिता 46:1, Hindi O.V.)

अगर हम उधार पर भरोसा करते, तो यह चमत्कार न देखते। कई बार परमेश्वर हमें सभी विकल्पों से खाली कर देता है, ताकि वह हमारा एकमात्र विकल्प बन सके।

हमेशा प्राकृतिक उपायों पर न झुकें

कई लोग परमेश्वर की शक्ति को कभी नहीं देखते, क्योंकि वे बहुत जल्दी इंसानों की सहायता लेने लगते हैं। डॉक्टर के पास जाना गलत नहीं है — यह पाप नहीं है। लेकिन यदि हम हर बार मानव सहायता पर ही निर्भर रहें, तो हम दिव्य सहायता को कैसे अनुभव करेंगे?

एक समय ऐसा आया जब मैंने बीमारी के पहले संकेत पर दवा लेना बंद कर दिया। मैंने कहा, “मैं परमेश्वर को अपने चंगाईकर्ता के रूप में जानना चाहता हूँ।” मैंने न दवा ली, न अस्पताल गया — केवल उस पर भरोसा किया।

अब वर्षों बीत चुके हैं। हर बार जब भी शरीर में कमजोरी महसूस होती है, मैं घोषणा करता हूँ:

“मैं यहोवा तेरा चंगाई करनेवाला हूँ।”
(निर्गमन 15:26, Hindi O.V.)

और थोड़ी ही देर में मेरी शक्ति लौट आती है। यही है उसकी शक्ति को प्रतिदिन देखना।

परमेश्वर की शक्ति हमारी चरम सीमा में प्रकट होती है

इस्राएली लोगों ने लाल समुद्र को तभी फटते देखा जब वे पूरी तरह फँस चुके थे। उन्होंने मन्ना तभी खाया जब वे जंगल से गुज़रे। चट्टान से पानी तभी निकला जब वे प्यासे थे।

“संकट के दिन मुझसे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊँगा और तू मेरी महिमा करेगा।”
(भजन संहिता 50:15, Hindi O.V.)

जब हम अपने सभी प्रयास छोड़ कर पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर हो जाते हैं, तब उसकी अलौकिक शक्ति प्रकट होती है।

पवित्रशास्त्र में शक्ति का क्रम

शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने मृत्यु के भय में भी परमेश्वर पर भरोसा किया, और वह

आग में उनके साथ दिखाई दिया।
(दानिय्येल 3:24–25)
दानिय्येल को सिंहों की मांद में डाला गया, परंतु परमेश्वर ने सिंहों के मुँह बंद कर दिए।
(दानिय्येल 6:22)
पौलुस और सीलास कैद में थे, पर जब उन्होंने स्तुति की, तो पृथ्वी काँपी और कैद के द्वार खुल गए।
(प्रेरितों के काम 16:25–26)

इन सबने कठिन परिस्थितियों में पूरी तरह परमेश्वर पर भरोसा किया, और इसलिए उन्होंने उसकी महिमा देखी।

अंतिम बात

“तू अपनी समझ का सहारा न लेना, परन्तु सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को अपने सब कामों में स्मरण कर, तब वह तेरे मार्ग सीधे करेगा।”
(नीतिवचन 3:5–6, Hindi O.V.)

परमेश्वर की शक्ति को अनुभव करने का एक ही तरीका है: समर्पण, भरोसा, और नम्रता।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp